आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : आठवां | दिसम्बर-2015

अमृतवेला	(प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले)	5
मौत	(सतसंग)	11
सवाल-जवाब	(प्रेमियों के सवालों के जवाब)	19
अनमोल वचन	(परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा)	29
बाबा सोमनाथ से मुलाकात	(परम सन्त अजायब सिंह जी)	31
धन्य अजायब	(सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी)	34

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
096 67 23 33 04
099 28 92 53 04

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 दिसम्बर 2015 -165- मूल्य – पाँच रुपये

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को कभी बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। जो नाम लेकर जपता नहीं उसे लाखों-करोड़ों लानतें हैं। सारे गुनाह बख्शे जाते हैं क्योंकि राम बख्श देता है लेकिन गुरु हत्यारा नहीं बख्शा जाता।

हमें गुरु का दिया हुआ नाम-भजन ईमानदारी से दिल लगाकर जपना चाहिए। परमपिता परमात्मा ने हमारी खातिर गंद का थैला शरीर धारण किया है। उसकी अपनी कोई गरज नहीं होती वह सिर्फ जीवों पर दया करने के लिए ही इस संसार मंडल में आता है बल्कि उसे परमपिता के द्वारा भेजा जाता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी के इतिहास में आता है आप कहा करते थे, ''इस संसार समुंद्र में आने के लिए मेरा दिल नहीं करता था लेकिन मैं परमपिता परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका।'' जिसे पीने के लिए अमृत मिले वह हथेली पर जहर रखकर नहीं खाएगा। जिसे स्वर्ग की सैर करने को मिले वह कल्लरों में रेत नहीं उड़ाएगा।

एक बार जिसका परमपिता परमात्मा से मिलाप हो जाए वह कभी भी बिछोड़ा सहने के लिए तैयार नहीं होगा। ऐसी महान आत्माएं परमात्मा के आगे सिर झुकाकर इस संसार मंडल में आती हैं। उनकी अपनी कोई गरज नहीं होती, उनमें दया होती है इसलिए वे जीव को नाम का निवाला दे देते हैं। जिस तरह हकीद जानवर कुत्ता द्वार-द्वार भटकता फिरता है। बहुत से साहूकार दया करके उन्हें रोटियां दे देते हैं। आप देखें! इसमें साहूकार की क्या गरज छिपी है? साहूकार को दया आई तो वह रोटियां दे देता है।

सन्त-सतगुरु को पता है कि यह जीव भी उस हकीद जानवर की तरह है। यह कभी पशु बनता है कभी पक्षी बनता है कभी कहीं गला कटवाता है तो कभी कहीं गला कटवाता है आखिर इंसान के जामें में आकर भी मुसीबतें भोगता है। फिरता-फिरता जब किसी सन्त के द्वारे आता है तो सन्त इसे हकीद जानवर समझकर नाम का निवाला दे देते हैं कि यह कितना दुखी है!

हमारा फर्ज बनता है कि हम नाम जपें। नाम जपने में किसी भी किस्म का आलस दरिद्र करना अपने आपसे घात करने के बराबर है। नाम न जपकर हम इस तरह कर रहे हैं जैसे हम अपनी गर्दन को खुद छुरी से काट रहे हैं। जो लोग कहते हैं कि मन नहीं लगता आप सोचकर देखें! मन क्यों नहीं लगता? जो भजन का चोर है ये सब उसकी ही शिकायतें हैं। वही कहता है कि मेरी टाँगे, गोडे-गिट्टे दुखते हैं मेरा कुछ नहीं बनता।

सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा आदमी भी कर सकता है।'' सन्त-सतगुरु अपना जातिय तजुर्बा बयान करते हैं, ''देखो भाई! मैं अपनी जिंदगी में इस तरह कामयाब हुआ हूँ अगर आप भी कामयाब होना चाहते हैं तो आप भी इस तरह करें।'' सन्त सिर्फ डेमोस्ट्रेशन देने के लिए ही कमाई करते हैं वे तो महान आत्माएं होती हैं।

मैं बताया करता हूँ कि ऐसी महान आत्माएं जब संसार में आती हैं तो उनके ऊपर गरीबी-अमीरी, पढ़-पढ़ाई का असर नहीं होता। कबीर साहब गरीब जाति में पैदा हुए। शाह बलख बुखारा एक बादशाह था, उसे परमार्थ का शौक था प्रभु मिलन का प्यार और तड़प थी। वह हिन्दुस्तान में कबीर साहब के पास आया। कबीर साहब ने उससे कहा, ''मैं एक गरीब जुलाहा हूँ, तू एक

बादशाह है तेरी मेरी गुजर कैसे हो सकती है?'' शाह बलख बुखारा ने कहा, ''आप मुझे जो भी रूखा-सूखा देंगे मैं उसी में अपनी गुजर कर लूंगा।'' कबीर साहब ने उसे रहने के लिए जगह दे दी। कबीर साहब ने सोचा! इसके अंदर 'नाम' रखना है कहीं बर्तन में मैल न रह जाए?

छह साल बाद माता लोई ने सिफारिश की कि यह एक बादशाह है अपने दरवाजे पर बैठा है इसे कुछ दें। कबीर साहब अंदरूनी राज के वाकिफ थे। कबीर साहब ने लोई से कहा, ''अभी बर्तन तैयार नहीं।'' लोई ने कहा, ''मैं इसे जो काम कहती हूँ यह जवाब नहीं देता।'' कबीर साहब ने लोई से कहा कि मैं इससे कुछ मंगवाता हूँ तू छिलके वगैरहा लेकर छत पर चढ़ जाना। जब यह बाहर निकले तो छिलके इसके ऊपर फैंक देना। जब लोई ने उसके ऊपर छिलके फैंके तो बलख बुखारा ने कहा, ''अगर मैं बलख बुखारा में होता तो तू देखती।''

लोई ने कबीर साहब से कहा, ''मैं तो समझती थी कि यह बेचारा बहुत शरीफ आदमी है कुछ भी नहीं बोलता।'' कबीर साहब ने कहा, ''मैंने तुझसे कहा था कि अभी इसके अंदर बलख बुखारा भरा हुआ है।'' छह साल और बीत गए। लोई की इतनी चढ़ाई नहीं थी कि वह परख लेती।

छह साल बाद कबीर साहब ने लोई से कहा, ''अब बर्तन तैयार है।'' लोई ने कहा, ''मैं तो इसे पहले की तरह ही समझती हूँ।'' कबीर साहब ने कहा, ''तू गंद वगैरहा लेकर ऊपर चढ़ जा। जब मैं इसे बुलाऊं तो गंद इसके ऊपर फैंक देना।'' जब लोई ने बलख बुखारा के ऊपर गंद फैंका तो बलख बुखारा ने कहा, ''मेरे ऊपर गंद फैंकने वाले तेरा भला हो मैं तो इससे भी गंदा हूँ।''

बलख बुखारा ने बारह साल बादशाही को ठोकर मारकर नाम लिया। जैसे ही कबीर साहब थ्योरी समझाने लगे बस! थ्योरी समझाने की देर थी सुरत ऊपर चली गई, यह तड़प का काम है।

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को आग के पास कर दें लेकिन हम गीले बारूद हैं। हमें जैसे-जैसे सतसंग और अभ्यास की तपिश मिलती है वैसे-वैसे हमारे अंदर पापों की नमी खुष्क होनी शुरू हो जाती है। एक दिन इसे भी आग लग जाती है, पापों के ढ़ेर सड़ जाते हैं; आत्मा अपने देश पहुँच जाती है।''

हमें मन को लानतें देनी चाहिए कि तू भजन नहीं करता आलस करता है। गुरु के साथ ठग्गी मारना गुरु के साथ द्रोह करना अच्छा नहीं। हम भजन पर बैठे हुए दुनिया के बारे में सोचते हैं। सोचकर देखें! क्या दुनिया किसी के साथ गई, हम किसका काम कर रहे हैं? हम कहते हैं कि हम गुरु का काम कर रहे हैं लेकिन याद दुनिया को करते हैं फिर यह गुरु का काम किस तरह हुआ? यह तो इस तरह है जैसे हम किसी बड़े स्याने आदमी के सामने गुनाह कर रहे हैं। हम बड़े आदमी की भी शर्म नहीं समझते, यह गुरु के साथ ठग्गी मारना है।

गुरु हमारा बड़ा आदमी है। आप जब नाम जपते हैं तो गुरु जरूर आपकी तरफ तवज्जो देता है लेकिन हम दुनिया के कारोबार में लगे होते हैं। एक ख्याल आया एक चला गया फिर कहते हैं कि लाईट तो नजर आई लेकिन बहुत जल्दी चली गई।

जब गुरु ने आपके अंदर नाम का दीपक जला दिया तो वह दीपक गया कहां? वह कहीं नहीं गया आपके अंदर ही है लेकिन

आपका मन आता है चला जाता है। उठकर घड़ी देख लेते हैं कि भजन में बैठे हुए एक घंटा हो गया। डायरी में लिख देते हैं कि एक घंटा अभ्यास हो गया लेकिन एक घंटे का कभी लेखा-जोखा किया कि मैं इस एक घंटे में कितनी बार बाहर गया कितनी बार अंदर आया और कितनी देर गुरु के संपर्क में रहा, मैंने भजन में बैठे-बैठे कितनी देर दुनिया का कारोबार किया?

जब भी अभ्यास में बैठना है सबसे पहले मन को जवाब देकर बैठें कि यह मेरा कीमती वक्त है। जब मैं तेरे काम में दखल नहीं देता तू भी मेरे काम में दखल न दे। मन ईमानदारी से अपने मालिक का काम करता है तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हम परमपिता परमात्मा सतगुरु का काम दिल लगाकर करें। गुरु का काम करना शिष्य का धर्म है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो, चौरासी का फेर बचा लो।

काल बड़ा जबरदस्त है यह किसी का लिहाज नहीं करता। यह जालिम है लेकिन उस जालिम के पंजे से छुड़ाने वाला गुरु है। क्यों न ऐसे गुरु दाते का हुक्म माना जाए उससे प्यार किया जाए उसका भजन अभ्यास किया जाए।

सतगुरु ने हमारी सब मुसीबतें अपने सिर पर ली हैं और वह हमें छुड़वाने के लिए इस संसार मंडल में आया है। हमने प्रेम-प्यार से अभ्यास करना है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना अगर हम अभ्यास को बोझ समझेंगे तो कामयाब नहीं होंगे। हाँ भई! सब प्रेम-प्यार से बैठें।

10 Oct 1981

***

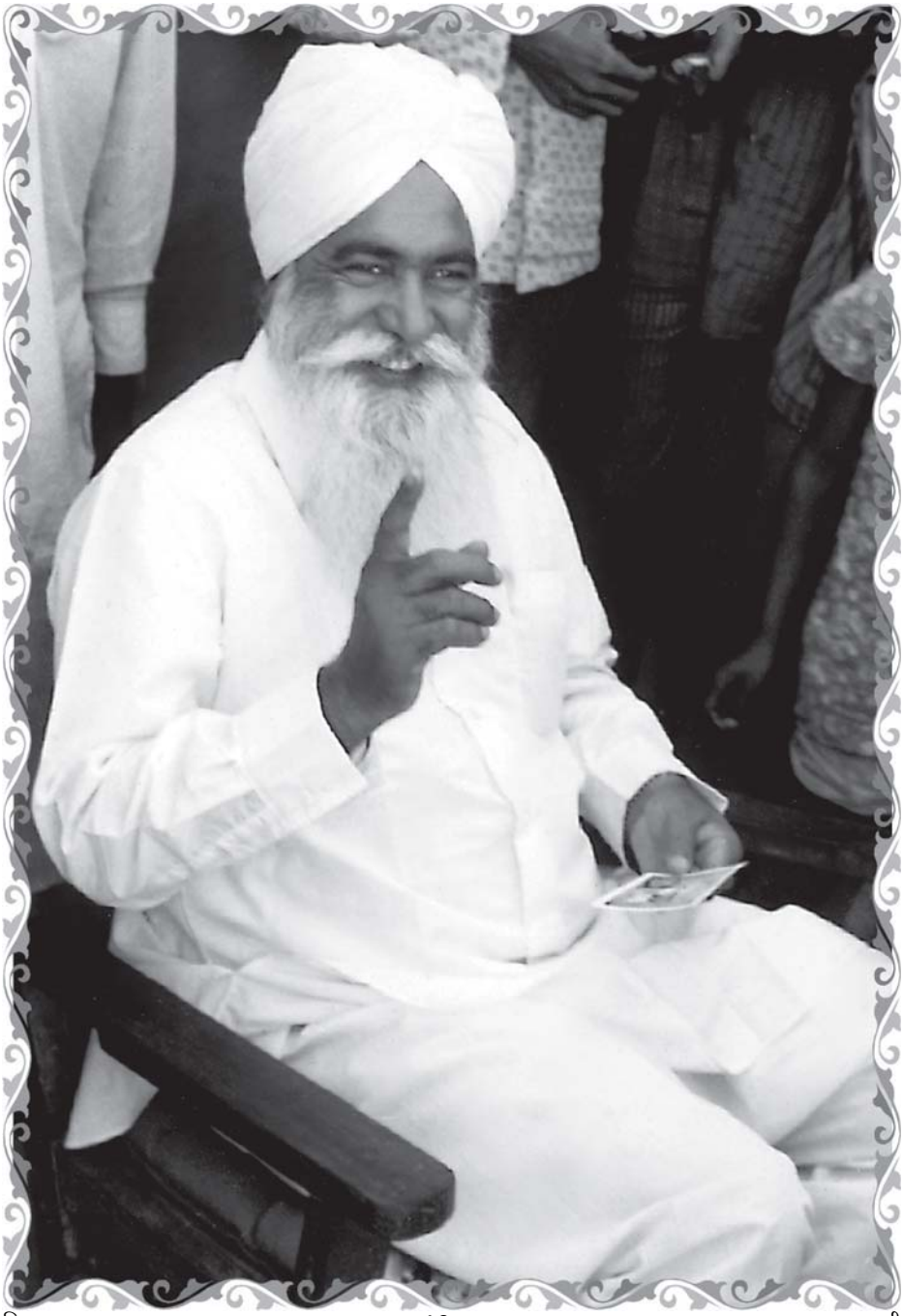

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मौत

स्वामी जी महाराज की बानी | DVD -544 | 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

सब सन्त-महात्मा होका देते गए हैं कि आपने जिस देश में दिल लगाया हुआ है यह देश आपका नहीं। आप जिस देह में बैठे हैं यह देह भी आपकी नहीं यह भी किराए का मकान है; वक्त आने पर आपको यह भी खाली करना पड़ेगा।

मौत का समय बहुत भयानक होता है। यह वक्त हर एक के लिए निश्चित होता है कि यह वक्त कब और कहाँ आएगा? उस समय कोई समाज, रिश्तेदार, धन-दौलत या दुनिया की मान-बड़ाई हमारी मदद नहीं कर सकती। उस समय हम अपने आस-पास के लोगों को देखकर रोते हैं और वे भी हमें देखकर रोते हैं लेकिन कोई हमारी मदद नहीं कर सकता।

जो सतसंगी अंदर जाते हैं मौत के समय उन्हें जो खुशी होती है, वह खुशी बयान से बाहर है। सच पूछें तो वह जिंदगी की सबसे बड़ी खुशी होती है क्योंकि उस वक्त गुरु अंदर प्रकट हो जाता है। गुरु रिश्तेदार, भाई-बहन का मोह खत्म कर देता है। अगर उस वक्त कोई बेसतसंगी पास न हो तो वह आपको हर चीज बताकर जाएगा। उस समय देखभाल करने वाले घबराए नहीं वह आपको सब कुछ बताकर जाएगा अगर हम घबराए हुए हैं तो वह खामोश हो जाएगा।

कई बार ऐसे वाक्यात देखे जाते हैं कि वह चार पहर या आठ पहर पड़ा रहा लेकिन उसने हमारी तरफ तवज्जो नहीं दी। जब बाजी हाथ से निकल जाती है वे फिर समझते हैं कि इसकी सुरत नाम में लग गई है; नाम मोह नहीं रहने देता।

महात्मा **मौत** और पैदाईश के दो वक्त याद करवाते हैं। जीव पैदाईश के वक्त माँ के पेट में गीली जगह पर उल्टा लटका होता है वह जगह बड़ी भयानक है। जब यह जीव बाहर आता है तब अपने ऊपर से मक्खी भी नहीं उड़ा सकता। यह उसकी देखभाल करने वालो की मर्जी है कि उसके साथ कैसा बर्ताव करते हैं? मौत के समय भी ऐसी हालत होती है कि इंसान हिल-डुल नहीं सकता कोई उपाय भी नहीं कर सकता।

महात्मा हमें चेतावनी देने के लिए आते हैं कि आप **मौत** को न भूलें हमेशा याद रखें। हम विषय-विकारों, मान-बड़ाई और ऐशो-ईशरत में तभी जाते हैं जब हम अपनी मौत को भूल जाते हैं। अगर हम मौत को याद रखें कि हमने यहाँ से जाना है तो हम मौत से बचने का उपाय जरूर करेंगे।

आपको पता ही है कि **मौत** राजा-राणा, गरीब-अमीर, औरत-मर्द किसी को नहीं छोड़ती। उस वक्त चाहे आप रोयें-पीटे कुछ भी करें मौत का फरिश्ता कोई लिहाज नहीं करता। अगर हम भजन-सिमरन करें और मौत की पहले से ही तैयारी करें तभी हम खुशी-खुशी जा सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि एक बादशाह किसी महात्मा के पास गया। महात्मा ने बादशाह का बहुत आदर किया। महात्मा जंगल में रहते थे उनके पास एक शेरनी वक्त पर दूध देने के लिए आती थी। शेरनी का दूध बहुत ताकतवाला माना जाता है। महात्मा ने दूध निकाला। महात्मा ने ज्यादा दूध पिया और थोड़ा सा दूध बादशाह को दे दिया। बादशाह दूध पीकर घर चला गया। उस दूध ने बादशाह को इतनी ताकत दी कि बादशाह ने रात को काम-वासना से काफी काम लिया।

सुबह बादशाह के मन में ख्याल आया कि मैं तो उस महात्मा को अच्छा समझकर उसके पास गया था। मैंने तो एक दिन थोड़ा सा ही शेरनी का दूध पिया है वह महात्मा तो रोज ही शेरनी का दूध पीता है वह तो मुझसे ज्यादा काम-वासना का शिकार होगा इसकी तहकीकात करनी जरूरी है। अगले दिन बादशाह फिर महात्मा के पास गया और उसने महात्मा से कहा, ''मुझे तो थोड़े से दूध ने बहुत तंग किया काम-वासना ने टिकने नहीं दिया। आप इतना दूध पीकर जरूर व्याभिचार करते होंगे और लोगों को महात्मा बनकर दिखाते हैं।'' महात्मा कमाई वाले थे, वह समझ गए कि बादशाह अभाव ले आया है इस गिरते हुए को संभालना जरूरी है।

महात्मा ने कहा, ''बादशाह! तेरे सवाल का जवाब थोड़े दिनों में देंगे। तू अच्छे खाने खा ले, अब हम खुश होकर तुझे रोज ही शेरनी का दूध पीने के लिए देंगे लेकिन आज से सातवें दिन तूने मर जाना है।'' आपको पता है कि जब मौत याद आ जाए तो कौन विषय भोग सकता है? विषय-विकारों का ख्याल ही भूल जाता है। मौत का नाम ही बुरा है। इंसान कहता है यह बात किसी और को सुनाना; **मौत** का नाम ही नहीं लेने देते।

बादशाह घर आया उसका दिल बुझा हुआ था। रानियां उसके साथ हास-विलास करें लेकिन वह खामोश था। रानियों ने कहा, ''बादशाह सलामत! कल तो आपने हमारे साथ बहुत काम-वासना का आनन्द लिया आज आप चुप हैं।'' बादशाह ने कहा, ''मैंने उस महात्मा की बहुत करामाते सुनी हैं, उसका कहा सच हो जाता है। महात्मा ने कहा है कि आज से सातवें दिन तूने गुजर जाना है।''

बादशाह ने रानियों से कहा कि मुझसे जो पूछना है पूछ लें कोई वसीयत करवानी है तो वसीयत करवा लें क्योंकि मैंने आज

से सात दिन के बाद मर जाना है।'' बादशाह महात्मा के पास दूध पीने के लिए तो जाता था लेकिन काम-वासना का ख्याल भूल गया।

जब बादशाह सातवें दिन नहीं मरा तो उसने महात्मा के पास जाकर कहा, ''मैं अभी तक तो ठीक-ठाक हूँ, मैंने सोचा! महात्मा के पास जाकर ही मरेंगे।'' महात्मा ने कहा, ''राजन! यह कौतुक तुझे समझाने के लिए ही रचा था। मुझे तेरे साथ प्यार है। तू प्रजा पालक है अच्छा न्यायकारी है। उस दिन तो दूध का एक घूँट पीकर तेरी ये हालत हुई थी अब तू रोज गिलास भरकर दूध पीता है अब तेरे अंदर काम वासना के ख्याल क्यों नहीं आए? क्योंकि तुझे **मौत** याद आ गई।''

महात्मा लोग **मौत** को भूलते नहीं सदा याद रखते हैं। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है:

मौत से डरत रहो दिन रात मौत से डरत रहो दिन रात।
ईक दिन भारी भीड़ पड़ेगी जम खूदेंगे धर धर लात।
वा दिन की तुम याद विसारी अब भोगन मे रहो भुलात।।

स्वामी जी महाराज हमें चेतावनी देते हैं कि प्यारेयो! ऐसा वक्त जरूर आएगा जिसका कष्ट बयान नहीं किया जा सकता। मौत का मुकाबला करना आसान नहीं, **मौत** का नाम सुनकर देह काँप जाती है। यम आएंगे कान से पकड़कर ले जाएंगे।

ये सब कुछ क्यों होता है? हम उस दिन की याद भूल गए हैं तैयारी नहीं करते। हम भोगों में मस्त होकर अपनी मौत को भूल चुके हैं। हम यह भी भूल गए हैं कि हमने एक दिन यहाँ से जाना है। हम सोचते हैं शायद! **मौत** लोगों के लिए है हमारे लिए तो ऐशो-ईशरते ही हैं।

गुरु नानकदेव जी चले जा रहे थे उनके साथ बाला और मरदाना भी थे। आगे कुछ लोग अर्थी लेकर जा रहे थे। गुरु नानकदेव जी ने उनके वारिसो को चेतावनी देते हुए यह भजन बोलाः

जागो जागो सुतयो, चलया बंजारा।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''प्यारेयो! आप सो रहे हैं आप भी जागें, आपका साथी जा रहा है।'' हिरन छलांगे लगाता हुआ अच्छी-अच्छी फसल खा रहा था। आप कहते हैं कि जिस परमात्मा ने तुझे पैदा किया है तू उसे याद नहीं करता उसे भूल गया है। शिकारी तेरे पीछे फिर रहा है उसने हाथ में बंदूक पकड़ी हुई है। शिकारी तुझे मार देगा और तू छलांगे लगाना भूल जाएगा; उस परमात्मा को भी याद कर।

कबूतर आसमान में उड़कर कलाबाजियां लगा रहा था। गुरु नानकदेव जी कबूतर से कहते हैं, ''तेरे दिल में आसमान में उड़कर बाजियां लगाने का शौंक है। क्या तुझे पता है कि तू जहाँ से उड़ा हूँ वहाँ वापिस आकर बैठ जाएगा, जो पानी या चोगा वहाँ छोड़कर आया है क्या तू वापिस जाकर उसे चुग लेगा? तुझे **मौत** के बाज ने आजाद नहीं छोड़ा हुआ। हो सकता है! बाज तुझे उड़ते हुए को ही आसमान में पकड़ ले।''

गुरु नानकदेव जी उन प्रेमियों को मुखातिब करते हुए कहते है, ''प्यारेयो! आपका साथी जिस ट्रेन पर चढ़ गया है एक दिन आपने भी उस ट्रेन पर चढ़ जाना है। ट्रेन में टिकट चैक करने वाले टिकट चैकर भी होते है वे तरस नहीं करते उनके दिल पत्थर के हैं। क्या तूने उस वक्त को कभी याद किया है अगर टिकट पास न हो तो क्या हाल होता है? किसी पूरे महात्मा से 'नाम' लेना ही टिकट है अगर हमारे पास टिकट हो तो टिकट चैकर कुछ नहीं कहते।''

गुरु नानकदेव जी महाराज उन्हें मुखातिब करके कहते हैं, ''प्यारेयो! सबसे पहले जिंदगी में 'नाम' का टिकट हासिल करें पूरे गुरु की रहनुमाई हासिल करें। आम महात्माओं ने अपनी लेखनियों में इस तरह की रेल का जिक्र किया है कि वहाँ चैकर धर्मराज होता है जो किसी की रियायत नहीं करता। अगर हमारे पास टिकट न हो तो बहुत मुश्किल होती है, दुनियादारी के लिहाज से जब धर्मराज सामने होता है तो टट्टी-पेशाब निकल जाता है बुरा हाल होता है। आप फिर कहते हैं तूने उस समय 'नाम' का टिकट क्यों नहीं कटवा लिया? अब मुश्किल में है।''

ईक दिन काठी बने तुम्हारी चार कहरवा लादे जात।।
भाई बंध कुटुम्ब परिवारा सो सब पीछे भागे जात।।

हिन्दुस्तान के रस्मों-रिवाज के मुताबिक ही महात्माओं ने बानी लिखी है। एक दिन तुझे काठ की घोड़ी मिल जाएगी। मुर्दे को सीढ़ी पर डाला जाता है और अर्थी को उठाने वाले चार कहराव होते हैं। सारे भाई-बंधु पीछे चलते हैं, औरत का सिर खोल देते हैं कि अब इसका कोई रखवाला नहीं रहा। वे रोते जाते हैं कोई मदद नहीं कर सकते।

आगे मरघट जाए उतारा त्रिया रोऐ बिखरे लाट।
वहाँ जमपुर में नर्क निवासा यहाँ अग्नि में फूँके जात।।

श्मशान का दृश्य बहुत भयानक होता है। जब अर्थी उतारी जाती है तो सब यार-मित्र दहाड़े मारकर रोते हैं। हिन्दु हैं तो शरीर आग में राख बना दिया जाता है, मुसलमान या ईसाई हैं तो कब्र में रख देते हैं, वहाँ कीड़े इसे खत्म कर देते हैं फिर यह शरीर नहीं मिलता। कर्मों के मुताबिक धर्मराज हमें नर्कों में भेज देता है।

दोनों दीन बिगाड़े अपने अब नेह सुनता सतगुरु बात।
वा दिन बहो पछतावा होगा अब तुम करते अपनी घात।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''देख प्यारेया! अब तो तू सन्त-सतगुरु की बात नहीं मानता कहता है कि 'नाम' जपने का टाईम ही नहीं, शरीर दुखता है। जब यम पकड़ लेंगे उस समय तुझे बहुत पछतावा होगा फिर पछताने का क्या फायदा?'' आप बहुत अफसोस से कहते हैं कि न दुनिया का रहा न परमात्मा का बना क्योंकि परमात्मा का 'नाम' नहीं जपा, परमात्मा को अपना नहीं बनाया। दुनिया को अपना बनाता रहा लेकिन दुनिया आज तक न किसी की बनी है, न बनेगी। न साथ आई है और न साथ जाएगी।

जवानी गई वृद्धता आई अब के दिन का इनका साथ।
चेत करो मानो यह कहना गुरु के चरण झुकाओ माथ।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''बालपना गया जवानी भी गई अब बुढ़ापा आ गया है। सिर हिलता है शरीर कायम नहीं रहा बुद्धि भी कायम नहीं रही। अब तू नाम की तरफ आ। दुनिया की तरफ से ख्याल हटाकर अपने गुरु के चरणों में सिर झुकाकर तौबा कर कि अब हमें बख्श दे।''

राधास्वामी कहत सुनाई अब तुमको बहो बिध समझात।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैंने आपको प्यार से बता दिया कि यह संसार सदा रहने वाला नहीं। एक दिन यहाँ से जरूर जाना है क्यों न इस जिंदगी से फायदा उठाया जाए? नाम की कमाई की जाए और उस वक्त की पहले से तैयारी करें गुरु के साथ प्यार करें जिसने हमारी हामी भरी है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपसे भजन नहीं होता तो सन्तों के साथ प्यार ही कर लें। सच्चे दिल से सच्चा प्यार करें। सन्त प्यार की मूरत होते हैं। आखिरी समय में आप सन्तों के पास जाएंगे। सन्त 'शब्द' में से आए हैं, वे आपको शब्द-नाम के बीच ही लेकर जाएंगे।'' ***

8 नवम्बर 1988

सवाल-जवाब

DVD No - 612

एक प्रेमी: *जब हम मर जाते हैं, हमारी आत्मा ऊपर चली जाती है तो क्या आत्मा उसी जगह हमारे पिता के पास चली जाती है जहाँ से हम आए हैं? या हम दोबारा धरती पर आते हैं और हमारा पुनर्जन्म कहाँ होता है?*

बाबा जी: हाँ भई! बड़ा दिलचस्प सवाल है, बहुत गौर से समझना है। बाबा जयमल सिंह जी से किसी प्रेमी ने पूछा, ''हिन्दुस्तान और पश्चिम में भी यह रिवाज है कि लोग मरने के बाद कुछ न कुछ क्रियाक्रम या रीति-रिवाज करते हैं। अब हमने नाम ले लिया है तो क्या हमें रीति-रिवाज करने चाहिए या नहीं?''

बाबा जयमल सिंह जी ने उस सतसंगी को बहुत प्यार से समझाया, ''जिस दिन नाम मिल जाता है उस दिन इसका जन्म सतगुरु के घर में हो जाता है सारा ही क्रियाक्रम हो जाता है।''

मैंने बगोटा में रत्नसागर के ऊपर कई सतसंग किए हैं अगर आप मैगज़ीन पढ़ें तो आपको इस बारे में बहुत आसानी से समझ आएगी फिर भी मैं आपको कुछ समझाना चाहता हूँ।

जब सतगुरु नाम देता है तो सेवक के अंदर बैठ जाता है, सेवक को तब तक नहीं छोड़ता जब तक इसे धुरधाम न पहुंचा दे। दाईं तरफ सतगुरु और बाईं तरफ काल बैठा है। जब आत्मा शरीर छोड़ती है पहले पैर सुन्न होते हैं फिर गोडे-गिट्टे और धीरे-धीरे सारा शरीर सुन्न हो जाता है। जब आत्मा आँखों के पीछे जाती है बहुत घबराई होती है इसे दर्द होता है। तुलसी साहब कहते हैं:

काल दाढ़ में आए चबानी, तब ठरके नैनन में पानी।

उस समय आँखों से पानी जा रहा होता है। आत्मा काल की दाढ़ में चली जाती है क्योंकि आगे काल बैठा है वह आवाज देता है कि तू इधर आ जा। ऐसी हालत उनकी होती है जिन्हें नाम नहीं मिला होता। जिन्हें नाम मिला होता है उनका सतगुरु दाईं तरफ बैठा होता है, वह आत्मा को संभाल लेता है।

यह महाराज सावन सिंह जी की दया थी कि हमें उनके चरणों में बैठने का काफी मौका मिला है। उस समय पंजाब में मुखालिफत बहुत जोरों पर थी। विरोधी एक-दूसरे से पवित्र नाम पूछते थे कि कि आप लोग वहाँ क्या लेने जाते हैं? एक बार महाराज सावन सिंह जी नामदान दे रहे थे तो कोई आदमी वहाँ आकर पांच पवित्र नामों को सुन गया और बाहर जाकर सबको बताने लगा।

किसी ने महाराज सावन सिंह जी को बताया कि फलाना आदमी चोरी से पाँच पवित्र नाम सुन गया है और वह लोगों को बता रहा है। महाराज जी ने कहा, ''नाम तवज्जो होती है गुरु की संभाल होती है अगर कुत्ता कपास के खेत में से निकल जाए तो वह सूट नहीं बनवा सकता।''

गुरु सेवक को तब तक नहीं छोड़ता जब तक धुरधाम न पहुँचा दे अगर हमने भूतों की तरह यहीं चक्कर काटने हैं तो सतगुरु से नाम लेने का क्या फायदा? सतसंगी को भूलकर भी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारा पुनर्जन्म कहाँ होगा? अब आपका जन्म सतगुरु के घर में हो गया है।

सिद्धों ने भी गुरु नानकदेव जी से सवाल किया था कि आपने अपना जन्म-मरण किस तरह खत्म किया है? आपको यह दवाई कहाँ से मिली थी? गुरु नानकदेव जी ने उन्हें बहुत प्यार से बतायाः

सतगुरु के जन्में गवन मिटाया अनहद राते ऐह मन लाया।

मैं आमतौर पर महाराज सावन सिंह जी का यह वचन दोहाराया करता हूँ कि कोई कुम्हार राजदरबार में मिट्टी छोड़ने के लिए जा रहा था, वह अपनी गधियों से कह रहा था, ''चल बीबी, चल बहन, चल माता।'' किसी आदमी ने उस कुम्हार से पूछा कि तू इन गधियों को बहन और माता क्यों कह रहा है? कुम्हार ने कहा कि हम खुल्ला बोलने वाले लोग होते हैं। मैं यह मिट्टी राजमहल में छोड़ने के लिए जा रहा हूँ पता नहीं मुँह से कोई ऐसा वचन निकल जाए कि राजा मुझे सजा दे दे इसलिए मैं प्रैक्टिस कर रहा हूँ।

प्यारेयो! हम रोज जो भजन-अभ्यास करते हैं, सतगुरु के आगे अरदास करते हैं कि अब तू हमें बख्श ले। सतगुरु ने बख्शकर ही हमें नाम दिया है। यह हमारी रोज-रोज की प्रैक्टिस है। हमारा फर्ज बनता है कि हम जीते जी इतना अभ्यास करें कि मन-इन्द्रियों की गुलामी से आजादी प्राप्त करके पहले ही स्वतंत्र हो जाएं। हमें यह सोचना ही न पड़े कि हमारा पुनर्जन्म कहाँ होगा। हम खुद उस जगह को जाकर देख लें।

नानक जीवंदया मर रहिए ऐसा जोग कमाईऐ।

क्यों न हम इस तरह का अभ्यास करें कि हम जीते जी जाकर उस जगह को देख लें अपने गुरु के दरबार में पहुँच जाएं।

प्यारेयो! बोलने को बहुत कुछ है। मेरा दिल भरा हुआ है मैं क्या बयान करूं! मेरा गुरुदेव पूर्व और पश्चिम के सब जीवों पर दया कर रहा है।

एक प्रेमी:- *प्यारे सन्तजी! कृपा करके हमें बताएं कि लगातार सिमरन, अभ्यास और प्यार भरे सम्बंध को कायम रखने में क्या*

परेशानियां आती हैं, हमारा उत्साह क्यों भंग हो जाता है हमें उस समय क्या करना चाहिए?

बाबा जी:- हाँ भाई! गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करते हैं जिन्होंने अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। वैसे तो नामदान के वक्त सब प्रेमियों को इस सवाल के मुत्तलिक बताया जाता है लेकिन मैं फिर भी आपको समझाने की कोशिश करूंगा। दुनिया में कोई कौम, कोई मजहब, कोई मुल्क या जाति हमारी दुश्मन नहीं; हमें गुमराह करने वाला दुश्मन हमारा मन है।

सब सन्त यही बताते हैं कि जब सच्चखंड में किसी आत्मा का फैसला होता है कि अब इसे दोबारा संसार में नहीं भेजना तो उस आत्मा को सतसंग में लाया जाता है। उसके अंदर नाम का उत्साह पैदा किया जाता है, सन्त उस आत्मा को नाम के साथ जोड़ देते हैं।

आप अनुराग सागर पढ़ते हैं कि काल ने कई युग भक्ति करके संसार की रचना का मसाला मांगा। काल को भी दर्द होता है कि यह मेरा जीव है इसे मैंने बहुत मेहनत से प्राप्त किया है यह अपने घर सच्चखंड न चला जाए! काल हमारे लिए हर किस्म की परेशानी पैदा करता है।

मैं आपको एक संसारी उदाहरण देकर समझाता हूँ जिससे आपको समझना आसान हो जाएगा। चाहे हम किसी भी मुल्क में बस रहे हैं जब तक हम उस मुल्क के कायदे कानून के मुताबिक अपनी जिंदगी बसर करते हैं वहाँ की हुकूमत का आदर करते हैं उसके खिलाफ कोई बात नहीं करते तो हमारा सब कुछ ठीक चलता रहता है, हमें किसी तरह की परेशानी नहीं होती। जब वहाँ रहने वाला कोई भी इंसान आजाद होना चाहता है तो उसके लिए वहाँ की सरकार हर किस्म की परेशानी पैदा करती है।

इस त्रिलोकी का मालिक काल है। सन्त हमें तन-मन के पिंजरे से आजाद करना चाहते हैं। मन काल का एजेन्ट है। मन इस शरीर के अंदर बैठा है यह कोई मिनट-सैकिंड खाली नहीं जाने देता। काल इसके अंदर खुष्की भरने और परेशानी पैदा करने की कोशिश करता रहता है।

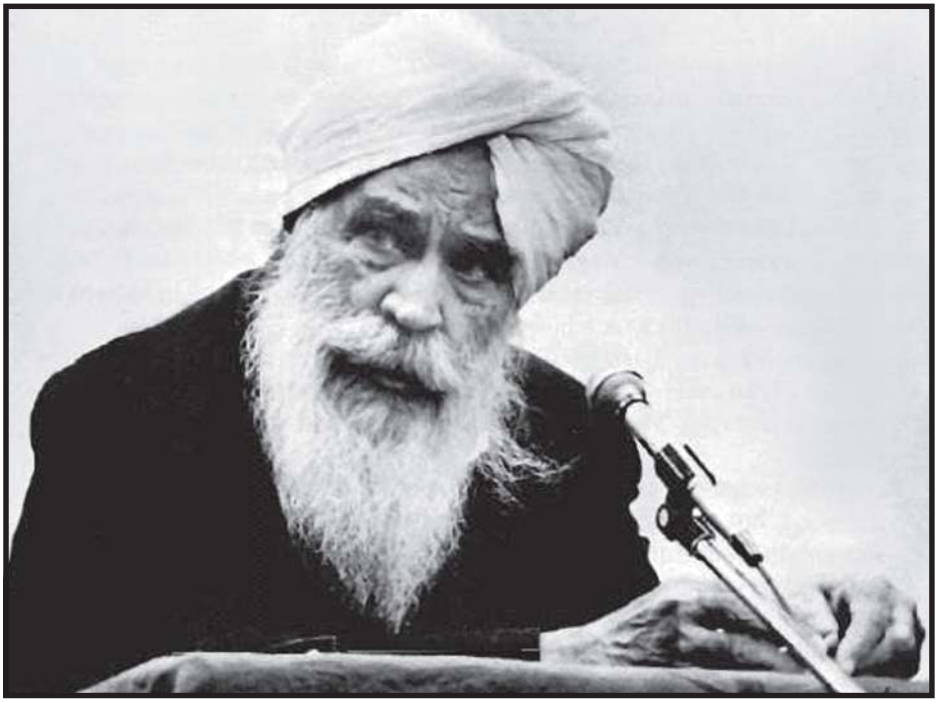

महाराज कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए कहा कि आप अपनी जिंदगी के मिनट-सैकिंड को कीमती समझकार लेखा-जोखा करें। जिसका मतलब यही था कि कई बार मन भजन पर बैठे हुए भी विद्रोह कर देता है आँखें खोल देता है कि अब मैंने नहीं बैठना।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि मन तोप के आगे खड़ा होना तो आसान समझता है लेकिन भजन पर बैठना मुश्किल

समझता है। मैं अपनी जिंदगी का वाक्या बताया करता हूँ कि दूसरी वर्ल्ड वार में काफी लोगों की बर्बादी हुई, काफी इंसानों की बलि चढ़ाई गई। हिन्दुस्तान में लोग तीस-तीस साल की कैद मंजूर कर लेते थे लेकिन आर्मी में जाना पसंद नहीं करते थे। आर्मी के अंदर मेरी लड़ाई में जाने की बारी नहीं थी लेकिन मैंने लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दे दिया।

जब हुजूर ने कृपा की तो आपने जमीन के अंदर मकान बनाकर बैठने के लिए कहा, ''मैं तुझे खुद ही मिलने आऊंगा।'' मैं उस समय का वाक्या बताया करता हूँ कि उस समय मन ने शेर का रूप धारण किया कि मैं तुझे इस गुफा के अंदर दाखिल नहीं होने दूंगा। अगर आपको गुरु पर भरोसा है आप समझते हैं कि गुरु का बल आपकी पीठ पर है तो कोई आपसे जीत नहीं सकता।

उस वक्त मैंने अपने गुरुदेव के आगे प्रार्थना की कि काल बहुत जबरदस्त है मेरे पीछे पड़ा हुआ है और तूने मेरी लाज रखनी है। प्यारेयो! शब्द-रूप गुरु आपके अंदर ही होता है सिर्फ पुकारने की जरूरत होती है वह जरूर हमारी मुनासिब मदद करता है।

कुछ दिनों के बाद दूसरी घटना घटी। हमारे इलाके में इतने भारी साँप नहीं होते। एक साँप मेरे पास आया तो धरती भी हिलने लगी। कई प्रेमियों को उस जगह के दर्शन करने का मौका मिला है वह छोटी सी ही जगह है। मैं अभ्यास में खामोश बैठा था। मैंने गुरु की याद नहीं छोड़ी। इतनी देर में कुछ आदमियों ने बाहर से आवाज दी कि अंदर साँप है। उन लोगों की आवाज सुनकर साँप इस तरह फुँकार मारने लगा जिस तरह कोई शक्तिशाली सांड मस्ती में फुँकार मारता है। मैंने कहा कि साँप अंदर नहीं है। उन्होंने कहा कि साँप अंदर ही है। जब साँप ने देखा कि ये लोग

मुझे मारेंगे तो उसने उनके ऊपर हमला किया। उस समय मैंने यही प्रार्थना की हे सच्चे पातशाह! यह सब तेरा ही खेल है।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि जब आपके दिल में जहरीले जानवर के लिए अच्छी भावना है तो वह आपके ऊपर हमला नहीं करेगा। सन्तों के दिल में हर जानवर के लिए प्यार होता है, वे उनके पास ही आकर बैठ जाते हैं लेकिन उन्हें कुछ नहीं कहते। इस सवाल के साथ इन घटनाओं का गहरा ताल्लुक है। आप भी प्यार से मन को इसका नुकसान समझाएं कि तू जो कुछ सोच रहा है या मन में ख्याल उठा रहा है कि भजन से उठ जा कि तुझे तो इतनी परेशानियां हैं तू किस तरह भजन कर सकता है? उस वक्त आप प्यार से इस मन को सिमरन में लगाएं। अगर फिर भी आप मन को शान्त नहीं कर सकते तो अपने शब्द-रूप गुरुदेव के आगे प्रार्थना करें लेकिन भजन न छोड़ें गुरुदेव जरूर आपकी मदद करेंगे।

महाभारत में कहानी आती है जिसमें कृष्ण अर्जुन से कहता है, ''देख भई! ये जितने भी तेरे दुश्मन खड़े हैं इन सबको मैं मारूंगा लेकिन सारा संघर्ष तेरे हाथों से करवाऊंगा तेरी फतह करवाऊंगा, तू एक बहाना तो बन।''

इसी तरह सतगुरु भी हमारी पीठ पर है वह मन के साथ हमारी लड़ाई करवाएगा लेकिन हमें मजबूत होकर बहाना बनना चाहिए। गुरु ने हमें शब्द धुन के साथ लेस किया हुआ है। फतह सेवक की होती है लेकिन करवाता गुरु है। गुरु के बिना यह कामयाब नहीं हो सकता अगर मन अपनी आदत नहीं छोड़ता हमारे ऊपर ख्यालों का हमला करता है तो हम अपनी आदत से बाज क्यों आएं! हम भी तेज गति से सिमरन करना शुरू कर दें, मन के अंदर गुरु का बल पैदा करें और फरियाद करें। मन ने

किस-किसके साथ धोखा नहीं किया? आप इतिहास पढ़कर देखें! भागवत पुराण पढ़कर देखें! आपको बहुत कहानियां मिलती हैं कि किस तरह मन ने ऋषियों-मुनियों को गिरा दिया।

जब मैंने अपनी सारी कमजोरियां परमात्मा कृपाल के आगे रखी तो आपने कहा, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे?'' मन अपनी आदत से बाज नहीं आता लेकिन हमें जो काम हमारे सतगुरु ने दिया है हमें भी उससे पीछे नहीं हटना चाहिए। हमें भी मन की तरह हठीले होकर भजन-सिमरन में लगना चाहिए। कभी बारीकी से सोचकर देखें! जब आपका मन आपको अभ्यास से उठा देता है या विद्रोह कर देता है कुछ समय बाद आपको यह भी बता देता है कि आपने गलती की फिर आपको होश आती है आप भजन पर बैठ जाते हैं।

मन सतसंगी को हमेशा एक खिलौने की तरह खिलाता रहता है लेकिन सतसंगी को मन की बात नहीं सुननी चाहिए। जब मन ऐसे ख्याल पैदा करता है अंदर खुष्की लाता है तब आप मजबूत होकर लगातार सिमरन करें। जहाँ अभ्यास में एक घंटा लगाते हैं वहाँ अभ्यास में दो-तीन घंटे लगाएं। मदद करने वाला गुरु हमेशा हमारे साथ तैयार होता है अंदर बैठा है उसने बाहर से नहीं आना लेकिन जब सतसंगी मन की आवाज सुनता है उस वक्त सतसंगी भजन छोड़ देता है अपने सामने अनेकों परेशानियां पैदा कर लेता है अगर कोई परेशानी न हो तो भी कहता है कि तुझे इतनी परेशानियां हैं तू भजन पर क्यों बैठता है?

कई बार सतसंगी मजबूत होकर भजन में बैठने की कोशिश करता है सिमरन करता है लेकिन मन फिर से वार करता है नींद ला देता है। दो-तीन घंटे पता ही नहीं चलता कि मैं भजन पर बैठा

था या सो रहा था। अगर नींद से भी सावधान रहता है तो मन प्यार का हथियार चलाता है कि तुझे नाम लिए हुए, भजन-अभ्यास करते हुए काफी साल हो गए हैं; तू अभी तक अंदर सच्चखंड पहुँचा ही नहीं। मन ऐसे भुलावे में डालकर परेशानी पैदा करके भजन से उठा देता है, अपने ऊपर इल्जाम नहीं लेता कि तुझे नाम लिए हुए दस साल हो गए हैं इन सालों में तूने कितना अभ्यास किया, क्या विषय-विकारों से मन को मोड़ा; गुरु के ऊपर श्रद्धा लाया ?

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप आलस्य, नींद और जल्दबाजी को छोड़ें। सतसंगी की जुबान पर सदा सिमरन, दोनों आँखों के दरमियान सतगुरु के स्वरूप का ध्यान और दिल सतसंग की तरफ लगा होना चाहिए।

आमतौर पर राजस्थान में प्रेमी लोग दर्शनों के समय अपने तजुर्बे बता देते हैं। उनके तजुर्बे सुनकर मेरा दिल बहुत खुश होता है। पिछले साल मुम्बई में एक अमेरिकन प्रेमी ने अपना तजुर्बा बताया कि वह किस तरह अंदर गया और उसने अंदर क्या-क्या देखा, उसकी कितनी ऊँचाई थी? उसने तो खुश होना ही था मेरा भी दिल खुश हुआ कि मेरा प्यारा बच्चा मन-इन्द्रियों की गुलामी से आजाद होकर अंदर गया है।

परमात्मा कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई का कभी बीज नाश नहीं होता।'' प्यारेयो! जैसी किसी की भावना होती है उसे वैसा जरूर मिलता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

तुम्हरी चिन्ता मैं मन धारी, तुम अचिन्त हो धरो ध्यान।

आप कहते हैं कि गुरु को सेवक की चिन्ता होती है। सेवक को तो अभ्यास का ही फिक्र होता है अगर हम इस बात को पकड़ लें

कि अब हमें हमारी चिन्ता करने वाला मिल गया है तो हम उस वक्त जब मन हमला करता है कभी अभ्यास नहीं छोड़ेंगे कभी संशय में नहीं पड़ेंगे। ऐसे समय में सतसंगी को मजबूत होकर भजन-अभ्यास करना चाहिए।

मैं सदा ही आपको सादे लफ्ज़ों में बताया करता हूँ कि मेरे दिल में ग्रुपों में आने वाले प्रेमियों की कद्र है सारे ही मेरे दिल पर लिखे हुए हैं। आप लोग इतनी दूर इतना किराया खर्च करके आते हैं मेरे दिल में उसका दर्द है और कद्र भी है। मैं यह नहीं चाहता कि आप यहाँ से कुछ लेकर न जाएं। यह सेवक पर निर्भर है कि उसने अपना बर्तन कितना बनाया है उसकी ग्रहण शक्ति कितनी है?

मुझे गुरु मिला मेरे गुरु ने मुझे जो कुछ कहा मुझ पर कृपा की, मुझे आज्ञा दी। मैं वह सब बहुत प्यार और श्रद्धा से कर सका। यह उनकी ही दया थी।

बाहरी तौर पर भी मन हमें भरमाता रहता है हम अभ्यास करने बैठते हैं अगर कुछ प्रेमियों को पता लग जाए कि अब यह दिन-रात अभ्यास करता है तरक्की कर रहा है, यह आपके ऊपर दया होती है। आप किसी को भी बताने की कोशिश न करें कि मैं अंदर सूरज, चन्द्रमा देखता हूँ या मेरे अंदर गुरु प्रकट हो गया है। अगर आप लोगों को बताएंगे तो वे लोग ईर्ष्या करेंगे इससे भी हमारा नुकसान होता है अगर कोई हमारी बड़ाई करता है तो हमें कुप्पे की तरह फूलना नहीं चाहिए होशियार रहना चाहिए कि मेरे ऊपर मन हमला कर रहा है।

प्यारेयो! सन्तमत श्रद्धा, प्यार और करनी का मत है। जिसे श्रद्धा है उसे प्यार भी होता है। प्यार में हम अभ्यास को बोझ नहीं समझते; यह करनी का मत है सोच-विचार का मत नहीं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अनमोल वचन

अनमोल वचन

16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान) DVD - 605

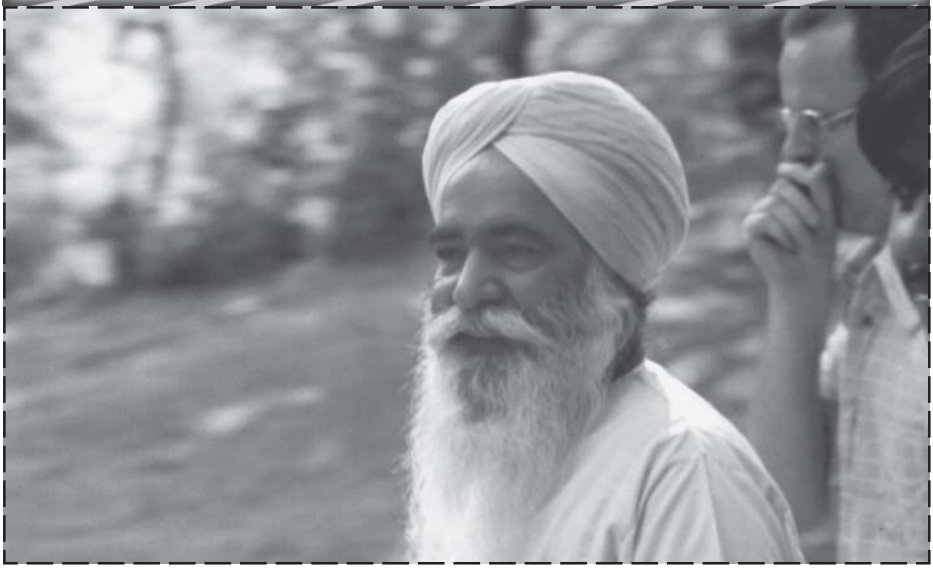

एक बादशाह ने अपनी प्रजा से कहा कि आज के दिन आपको कपड़ा, अन्न-धन और जो कुछ भी चाहिए खुले दिल से लें। बादशाह ने सारा दिन खुले हाथों से अपनी प्रजा को खूब माल लुटाया। शाम के समय एक भंगी ने बादशाह के पास आकर कहा, ''मुझे तो अभी पता लगा है कि आज आप सारा दिन सौगातें बाँट रहे हैं, आप मुझे भी कुछ दें।''

बादशाह ने सोचा! यह बहुत मेहनत करके आया है और बहुत आज़जी दिखा रहा है। बादशाह ने उस भंगी को एक सोने का थाल दे दिया, उस थाल में पांच लाल और एक बहुत अमोलक हीरा जड़ा हुआ था। भंगी थाल पाकर बहुत खुश हुआ लेकिन उसे उस थाल की अहमियत का पता नहीं था।

घर आकर उसने वह थाल अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी थाल पाकर बहुत खुश हुई कि मैं चार आने का छज्ज लाती हूँ जो दो दिन बाद टूट जाता है,। अगले दिन सुबह जब उसने लोगों का गंद-मैल उस थाल में डाला तो वह थाल काला हो गया। आवाज आई कि तुमने यह बहुत बुरा काम किया है लेकिन उस आवाज को कौन सुनता है! लाल बुझ गए और हीरे का रंग फीका पड़ गया।

यह तो आपको समझाने के लिए एक कहानी है। सच्चाई यह है कि वह बादशाह कुलमालिक परमात्मा है। जब हम कई किस्म की योनियों में चक्कर काटकर थक जाते हैं फिर किसी योनि में ऐसा कर्म हो जाता है तो हमें इंसानी जामा मिलता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सन्त किसी पेड़ का फल खा लें, किसी जानवर की सवारी कर लें अगर कोई कीड़ा भी उनसे टकराकर मर जाता है तो उसे इंसानी जामा मिलता है। यह परमात्मा की तरफ से सन्तों पर दया है।''

ऐसी ही हालत उस आदमी की थी जब उसने आज़जी से परमात्मा से कहा, ''मुझे भी कुछ दें।'' परमात्मा ने खुश होकर इंसानी जामा दे दिया। वे लाल पाँच ज्ञानेन्द्रियां और चमकता हुआ हीरा बुद्धि है लेकिन इंसान ने इस सोने के थाल इंसानी जामें की कद्र नहीं की। इस इंसानी जामें में आकर विषय भोगे, मीट-शराब खाया-पिया जिससे पांचों लाल ज्ञानेन्द्रियां बुझ गई, हीरा बुद्धि भी मैली हो गई बुझ गई, अंधेरा हो गया। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाए, सिफत सलाही छड्ड के करनी लगा हंस।।

विषय-विकार कौड़ियां हैं। इस हंस ने नाम जपकर इंसानी जामा सफल करना था अमृत पीना था लेकिन विषय-विकार भोगकर इस हीरे इंसानी जामें को बेकार कर रहा है। *** 27.12.1987

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बाबा सोमनाथ से मुलाकात

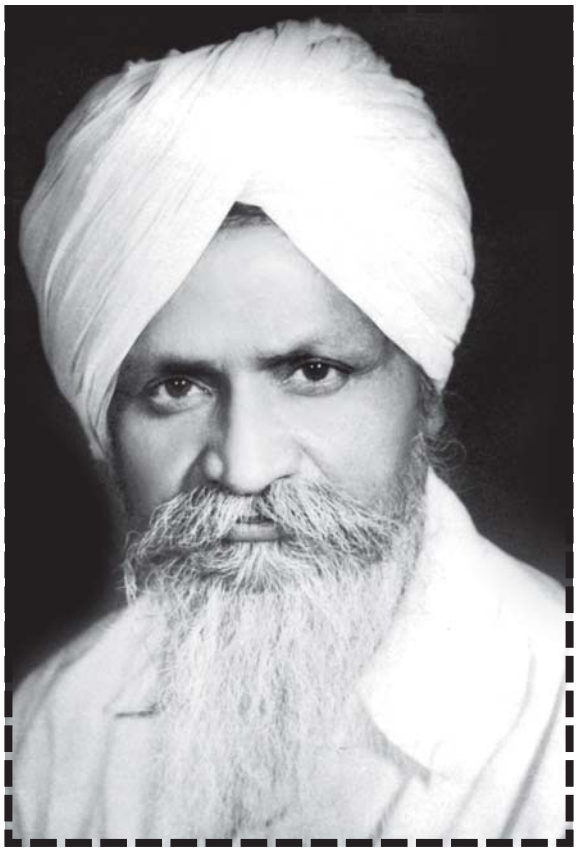

सतसंग शुरू करने से पहले मैं बाबा सोमनाथ जी की संगत के आगे कुछ विनती करना चाहता हूँ। मैं आपके पास आपका गुरु नहीं बल्कि आप लोगों का सेवादार बनकर आया हूँ। बाबा सोमनाथ जी ने जिन आत्माओं को 'शब्द-नाम' दिया है मैं उनके प्यार का खिंचा हुआ आपके पास आया हूँ। एक माली बूटे लगा जाता है और दूसरा माली उन्हें पानी देकर हरा-भरा कर लेता है।

मेरे दिल में बाबा सोमनाथ जी की संगत की बहुत इज्जत है। मैं यहाँ सिर्फ आप लोगों की सेवा करने के लिए आया हूँ। जब मैं अमेरिका गया तो मुझे वहाँ बाबा सोमनाथ जी के सेवक मिले। मैंने उन सेवक प्रेमियों को बाबा सोमनाथ के बारे में जानकारी दी कि किस तरह एक बार महाराज सावन सिंह जी ने मेरा मिलाप बाबा

सोमनाथ से करवाया था। मैं भी बाबा सोमनाथ की तरह बचपन से ही मालिक की खोज में था। मैंने काफी जप-तप किए धूनिया तपाई और भी कई किस्म के साधन किए।

मेरे पहले गुरु बाबा बिशनदास जी और मैं जब महाराज सावन सिंह जी के चरणों में गए, तब बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन से कहा, ''मेरे इस शिष्य ने बहुत कर्मकांड किए हैं मेरे पास जितनी दौलत थी मैंने इसे दे दी है लेकिन इसके मन को शान्ति नहीं आई।'' बाबा बिशनदास के पास 'दो-शब्द' का ही भेद था जो उन्होंने मुझे दिया था।

बाबा बिशनदास जी एक पवित्र आत्मा थी वह अपने आपको गुरु मानकर नहीं बैठे थे, जब उन्होंने मेरे लिए महाराज सावन से अर्ज की कि यह मेरा शिष्य है। उस समय महाराज सावन ने कहा कि हमारे पास भी एक ऐसी आत्मा है जिसने दुनिया में आकर बचपन से ही जप-तप, धूनिया वगैरहा सभी कर्मकांड किए हैं। तब महाराज सावन ने मेरा मिलाप बाबा सोमनाथ से करवाया। उस समय बाबा बिशनदास जी बहुत बुजुर्ग हो चुके थे, उनके चोला छोड़ने के थोड़े दिन रह गए थे। महाराज सावन ने अपनी दया से फरमाया, ''बाबा जी! अब नाम का वक्त नहीं लेकिन मेरा यह वायदा है कि मैं आपको अंदर से ही ऊपर ले जाऊगा।''

बेशक अंदरूनी तौर पर सन्त एक ही मंडल से आते हैं और वे अंदर हमेशा ही इकट्ठे मिलते हैं। सन्त जिन आत्माओं को इस संसार मंडल में छोड़ जाते हैं उन आत्माओं के दिल में बहुत इंतजार होता है कि इस संसार में कम से कम उन्हें भी कोई पानी दे! इस वक्त पीछे जो ताकत काम करती है वह किसी न किसी तरीके से उनकी रखवाली के लिए अंदर बैठा इंतजाम करता है।

जो लोग यह समझते हैं कि हमारा सतगुरु चोला छोड़ गया है वह हमारी संभाल नहीं करेगा वे लोग बहुत भूले हुए हैं। सन्त-सतगुरु सिर्फ चोला छोड़ते हैं लेकिन 'शब्द-रूप' होकर हर सतसंगी के अंदर हैं और अंदर ही रखवाली करते हैं। कहीं यह ख्याल हो! वे नाम देकर भूल जाते हैं, वे भूलते नहीं अंदर बैठकर हमारा हर किस्म का इंतजाम करते हैं।

उन प्रेमियों ने अमेरिका में ही मन बनाया कि हम बाबा सोमनाथ जी की संगत के साथ आपका मिलाप जरूर करवाएंगे क्योंकि आपकी जीवनी भी बाबा सोमनाथ की तरह है। उन प्रेमियों ने मोहन और दामू को जानकारी दी। काफी महीने पहले दामू और मोहन दोनों ही मुझे दिल्ली में प्यार से मिले। इन दोनों प्रेमियों ने मुझसे कहा कि आप हमें मुम्बई में कुछ समय दें।

फिर दामू और मोहन के साथ पत्र व्यवहार होता रहा। कुछ समय बाद मैंने कहा कि मैं दिसम्बर में साध-संगत के दर्शन करूंगा, आप लोगों का प्यार मुझे यहाँ खींचकर लाया है।

मैं बाबा सोमनाथ की संगत का धन्यवादी हूँ जिन्होंने मुझे सेवा का मौका दिया है। आप बाबा सोमनाथ के पैरों को हाथ लगाते रहे हैं। मेरी बाबा सोमनाथ जी की संगत से विनती है कि मेरे पैरों को हाथ न लगाए क्योंकि मैं पैरों को हाथ लगवाकर खुश नहीं होता। आप मेरी आँख से आँख मिलाएं, आप मुझे राधास्वामी बोल सकते हैं।

सन्त-सतगुरु अपने अंदर नम्रता लेकर आते हैं। जिन आत्माओं के लिए हुक्म होता है कि इन्हें साथ लाना है वे उन्हें जरूर साथ ले जाते हैं।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम:

25, 26 व 27 दिसम्बर 2015
2, 3, 4,5 व 6 फरवरी 2016

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से मुम्बई में 6,7,8,9,10 जनवरी 2016 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन, शान्तिलाल मोदी मार्ग
(नजदीक मयूर सिनेमा), कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई–400 067
☎098 33 00 4000, व (022) –24965000